24 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

जहां को रोशन करने वालों की

महफिल में रहने का अनुभव

➢➢ बाबा बुला रहे हैं बच्चे वतन में आओ

➳ _ ➳ मैं आत्मा फरिश्ता ड्रेस में उड़ चलती हूं सूक्ष्म वतन की ओर

→ यहाँ महफिल सजी है फरिश्तों की

■ जहान के नूरे रत्नों की

➳ _ ➳ मैं श्रेष्ठ आत्मा... जहान का नूर हूं

→ बाबा के नैनों में समाई हुई

→ बाबा ने जैसे मुझे अपनी पलकों पर बिठा रखा है

→ मेरी रोशनी से यह जहान रोशन है

➳ _ ➳ मैं संसार की आधार मूर्त आत्मा हूँ

→ जैसी मेरी स्थिति वैसी इस जहान की स्थिति

→ मैं बाबा से सुख की किरणें ले

■ सुख स्वरूप बन रही हूं

■ यह जहां भी सुखमय हो रहा है

→ शांति सागर बाप की किरणों से ओतप्रोत

■ मुझ आत्मा से शांति की सरिता बह रही है

■ सर्व आत्माएं शांत हो रही है

➳ _ ➳ मैं सदा जागती ज्योत हूँ

→ मैं जाग रही हूं

■ तो सब आत्माएं जागी हुई

→ जागते ही रहना है

■ हर पल चेक करती हूं स्वयं को

➢➢ क्या भक्तों की पुकारे पड़ती नहीं सुनाई, उनको दरस दिखाओ, अब कुछ तरस तो खाओ

➳ _ ➳ मैं इष्ट देवी हूं

→ भक्त मेरी एक सेकंड की दृष्टि लेने के इंतजार में

→ क्यू लंबी है

→ सबको नजर से निहाल कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा तपस्या लीन... शंकर हूँ...

→ माया की धूल मेरी तपस्या को भंग नहीं कर सकती

■ ना पुराने संस्कार

■ ना व्यर्थ संकल्प

■ ना ही प्रकृति की हलचल

→ मैं संपूर्ण हूँ

→ एकाग्र हूं

→ मेरा तीसरा नेत्र खुल रहा है

→ मेरा तीसरा नेत्र खुल गया है

- मैं स्वयं के परिवर्तन का आधार हूं
- मैं विश्व के परिवर्तन का आधार

➳ _ ➳ मैं दर्शनीय मूर्त बन गई

→ अपनी संपूर्णता की स्थिति में स्थित हो

- एकाग्र दृष्टि
- अचल दृष्टि भक्तों को दे रही हूँ

→ मेरी संपूर्णता का दर्शन कर

- विश्व की आत्माएं दुखों से छूट सच्चे सुख की प्राप्ति कर रही हैं

→ मैं अचल निरंतर जागती ज्योति... नूरे जहाँ

- इस जहां को रोशन कर रही हूँ